इस विषय में प्रचार, प्रसार के उद्देश्य से ही अलहिल काला ान आरम्भ किया गया था। इससे जन साधारण में क्रांति की लहर गई।

इस घटना से ब्रिटिश शासन बेचैन हो उठा। अन्त में उसकी ादतियों के कारण अलहिलाल का प्रकाशन अन्तिम अंक 18 नवम्बर 914 को निकाल कर बन्द करना पड़ा।

फिर आजाद ने 12 नवम्बर 1915 को 'अल-बलाग' का प्रकाशन आरम्भ किया। किन्तु ब्रिटिश सरकार के खिलाफ लिखने का उनका क्रम चलता रहा। यह सरकार को गवारा नहीं था। अतः अल बलाग पर पाबन्दी लगादी गई। आजाद कलकत्ता से निष्काषित कर दिए गए। जब पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और बम्बई में भी उनका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया तब वे 1916 में बिहार में रांची चले गए। छः माह बाद ही उन्हें कैद करके नजरबन्द कर दिया गया।

रांची की कैद ने आजाद को अब राजनीति के क्षेत्र में पूरी तरह उतार दिया था। वे जनवरी 1920 को जेल से रिहा किए गए। वे कलकत्ता आ गए। तब तक रौलट एक्ट, अमृतसर का जलियां वाला बाग काण्ड, जनरल डायर और उसके सैनिकों के अत्याचार, सैंकड़ो व्यक्तियों की हत्या, नेताओं की धर-पकड़ आदि घटनाएं घट चुकी थी।

उस समय गांधीजी राजनीति के क्षेत्र में छाये हुए थे। पहला विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था। इस युद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजी शासन को भरपूर सहयोग दिया था, किन्तु बदले में उन्हें कुछ न मिला। सामान्य भारतीय तो अंग्रेजों की दुर्भावनाओं से नाराज थे ही, मुसलमानों में भी उनके प्रति रोष उत्पन्न हो गया था।

आजाद ने 18 जून, 1920 को गांधीजी से भेंट की। गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा जिसे आजाद ने तुरन्त स्वीकार कर लिया। उनके प्रयास से इस आन्दोलन की आग समस्त भारत में भड़क उठी। आजाद को मुसलमानों में अंग्रेजी राज के विरुद्ध रोष पैदा करने का अवसर मिल गया। ब्रिटिश नौकरशाही के विरोध में उन्होंने नई चेतना जगाने वाले जोशीले भाषण देकर जनता में जागृति पैदा की।